अथ रायगढ़ वर्णन

मालती सवैया†

जा पर साहि तनै सिवराज सुरेस कि ऐसी सभा सुभ साजै ।
यों कवि भूषण जंपत हैं लखि संपति को अलकापति लाजै ।।
जा मधि तीनिहु लोक कि दीपति ऐसो बड़ो गढ़राज बिराजै ।
बारि पताल सो माची मही अमरावति की छवि ऊपर छाजै ।।१५।।

शब्दार्थ—तनै = (सं०—तनय) पुत्र । जंपत = कहते हैं । अलकापति = कुबेर । दीपति = दीप्ति, छवि । गढ़राज = रायगढ़ । बारि = जल, यहाँ खाई, जिसमें जल भरा रहता उससे तात्पर्य है । माची = कुर्सी, पुस्ती मकानों के पीछे बँधती है ।

अर्थ—श्री साहजी के पुत्र शिवाजी जिस पर अपनी सुन्दर सभा सुरेश (इन्द्र) की सभा के समान करते हैं, भूषण कवि कहते हैं कि उसके वैभव को देखकर कुबेर भी शर्माता है अर्थात् उसकी अलकापुरी भी ऐसी उत्तम नहीं, तीनों लोकों की छवि को धारण करने वाला ऐसा बड़ा सुन्दर रायगढ़ शोभित है । उसकी खाई पाताल के समान, कुर्सी पृथ्वी के समान और ऊपरी भाग अमरावती (इन्द्रपुरी) के समान शोभायमान है ।

---

† सात भगण (ऽ।।) और दो गुरु वर्ण का मालती सवैया होता है । इसे मत्तगयंद भी कहते हैं ।